विदा-गीत

गीतक गाम उदासल।
मनकेर चार उछाहल सन अछि
आँखिक धार पियासल।

हुलकि हुलकि ओलती तकइत अछि
चिनमारक मुँह लटकल,
चौकठि एसगर गड़ल-गड़ल अछि
मन अछि उखड़ल-उखड़ल
उठल कहार चलल ड्योढ़ीसँ
टोलक कंठ झकासल।
घंटी बौक सराय निहारय
फुलडाली विध्रुआयल

बाढ़नि देलक पटोटनि भोरे
आङनमे ओङ्घरायल
आँचर-आँचर कलश-कलश केर
प्यास रहत अजबारल।
ड्योढ़ी ताकय दरबज्जा दिस
दरबज्जा मुँह झाँपय
आङन केर टाटक हिचुकी सुनि
हनुमानक ध्वज काँपय
सूप अगौं केर खरिहानेमे
बज्जर भेल, उपासल।
मेहदी कानि, अकानि रहल छै
लगुजा पयरक पायल
अरिपन केर आङुरसँ तुलसी,
कहियो कहाँ अघायल,
एखनहि हाट पसारल सन छल
एखनहि गेल उसारल।
बाकुट-बाकुट क्षण बिलहल अछि
कालक भरल चङेरा
सबदिन सँ सब घर कुचरल अछि
कौआ चढ़ल मुड़ेरा
हास मदन केर रौद इजोरिया
उमगायल अवसादल।

गीत

अहाँ छी हमर महाजन ।
आँखिक मुसुकानक गाहक हम
बदला मे ई जीवन ।

राति हमर बन्हकी लागल अछि
दिन अछि हमर उधारी,
साँझ अपन हम बेचि रहल छी
भोरुक कोन पुछारी,
जै साँझक नहि भोर बनल अछि
ओहि रातुक छी चानन ।
यौवन पड़ल हमर अछि भरना,
हम रैयत खतियानी,
दस्तावेज लिखल आँचर पर,
हम मोहरिल खनदानी,
लहना आर तगेदा थिकहे
एहि सम्बन्धक कारण ।
कुरकी जपती सबटा भोगल
भोगल मनक निलामी,
दखल देहानिक डिगरी हाथहि
भेल करओ बदनामी,
यौवन केर चपरासी घुसहा,
माङ्य किदन कहाँदन ।
बाटक सबटा मोड़ टपल छी
आगूमे चौबटिया,
साँझ पड़त कुन पंथ कहतके
उसरत पसरल हटिया,
फोलल जतेक बन्हायल ततबे
लागल तेहने बन्हन ।
अहाँ छी हमर महाजन ।

●

गीत

पुरिबा किदन कहाँदन सुनबय ।
नीमक ठाढ़ि माति गेलि सुनि-सुनि
सिहरय, लजबय, बिहुँसय ।

गगनक कुंज, रास अछि लागल
नखत-नखत अछि एखन हकारल
कहत मनक के निश्चय ।
दिशि-राधा केर आँचर ससरल
देखि रहल घनश्याम पियासल
किरणक मुरली बजबय ।
धरणिक पत्र ज्योति केर मसि अछि
नखतक आखर, दसखत शशि अछि
पतिया पुनि पुनि पठबय ।
एसगरुआ केर वेदन केहनदन,
उजड़ल उपड़ल मन-वृन्दावन
दृग-यमुना जनु दरकय ।
पुरुषे श्याम प्रकृति अछि राधा
दुहु अछि, दुहु हित आधा-आधा,
सृष्टिक क्रम अछि चलबय ।
पुरिबा किदन कहाँदन सुनबय ।

●

गीत

मन होइयँ अहाँकेँ टोकी आ कि नञि टोकी।

आँखिक जे छन्दमे अछि
अधरक कतेक भाषा
आँचरके रंगमे अछि
लाजक जेना परिभाषा

जे गीत बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

ड्योढ़ीक बाँहिमे अछि
स्वागत जेना उताहुल
आङन के टाट भरिदिन
खड़िये जेना उचारल

जे रूप बहि रहल अछि रोकी, आ कि नञि रोकी।

बाटक जे मोड़ सब अछि
सबपर हकार साटल
यौवन के द्वार पर अछि
कालक कहार राखल

जे साँस बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

साँझक करेज पर अछि
रातुक पहाड़ राखल
जीवन के छन्दमे अछि
गीतक पथार लागल

जे प्यास बहि रहल अछि, रोकी, आ कि नञि रोकी।

●

गीत

घनश्याम जेना अगुतायल अछि।
आङी हरियर पहीरि धरणि जनि
आँचरसँ उधिआयल अछि।

भीजल कदमक ठाढ़िक चुम्बन
हित पुरिबा ललचायल,
धरणि-नयन केर रंग जेना
नब कनिञा सन अलसायल
पहिल अषाढ़क पहिले अनुभव
सँ जनु दूभि डेरायल अछि।
दूबरि पातरि सरिता केर
तनमे, यौवन उमड़ल अछि
आइ अचानक मोन दुकूलक
कसकल अछि, मसकल अछि
श्यामक बरजोरीमे तट-राधा
केर, मन भसियायल अछि।
खेतक आँचरमे शस्यक अछि
छन्द केहन इतिहासल
धरती केर जीवन-वंशीमे
रागक बाजत पायल,
बाधक मन जनु चासक गीतेसँ
एहिखन हरिआयल अछि।
खरिहानक मन उमगल देखल
आङन हुलसल, फुलसल
फुलहारि बिहुँसल देखल तँ
चिनमारी अछि चमकल,
आङन केर तुलसी एखनहि स
अरिपन हित ललचायल अछि।
घनश्याम जेना अगुतायल अछि।

●

परिशिष्ट

कविता

नवीन-वर्ष

पछिला वर्षक अन्हार केर केंचुआ कें छोड़ने
ट्रैफिक गाइड जकाँ हाथ उठौने
बुढ़बा इतिहास अपन कंपित आकाश नेने
नवीन वर्षक सिंहद्वार पर आबिकें
ठाढ़ भ' गेल अछि, निरीह भावें।
वर्ष भरिक सद्भावना-यात्राक
अनेक संधि-पत्रक अनेक लहास
अपना पीठ पर लादने, डाक-प्यून जकाँ आकाश
अपन अपन भूमि पर चलैत रहत वर्ष भरि।
इतिहास-देवता —
श्मशानमे बहैत बसात जकाँ उदास अछि,
पाँतरमे ठाढ़ एसगरुआ तारक गाछ जकाँ तटस्थ अछि,
मंदिर, मस्जिद आ गिरजाघरक गुम्बद जकाँ अवाक् अछि
(आ भविष्य) ?
भविष्य प्रेसक सतर्क मैनेजर जकाँ
पांडुलिपिक प्रतीक्षामे बैसल अछि।
(वर्त्तमानक पांडुलिपि)
नञि जानि, ओ पांडुलिपि
कॉमेडीक थिक अथवा ट्रैजेडीक ?

●

इतिहासक गली

फूटल घैलक खपटा जकाँ
हम अपन अतीतकेँ
इतिहासक गलीमे फेकि आयल छी,
हमर वर्त्तमान
डस्टबीन मे फेकल अयनाक छोट-छोट
टुकड़ी जकाँ
चमकि उठैत अछि,
जाहिमे देखबामे अबैत अछि
पाँच वर्षक लेल कटल हमर हाथ
सटकल हमर पेट
नग्न हमर देह
प्यासेँ तबधल हमर खेत
उदास तकैत चिमनी
बिनु माथक भीड़
अपर्याप्त चौराहा,
सबटा डस्टबीनमे चमकि रहल अछि
(आ भविष्य ?)
भविष्य तँ ग्लेशियर जकाँ अदृश्य अछि,
ठोसो अछि, तरलो अछि, बहैत आबि रहल अछि।
फूटल घैलक खपटा जकाँ
हम अपन अतीतकेँ इतिहासक गलीमे
फेकि आयल छी।

●

साम्राज्यवाद

विश्व-शांतिक द्रौपदी केर चीर
खिचने जा रहल अछि
आन्हरक संतान,
(दृश्य केर वीभत्सताक छैक ने किछु भान)
कौरवी-लिप्सा निरंतर आइ बढ़ले जा रहल
दिन-राति।
वृद्ध सभ आचार्य केर प्रज्ञा गेलनि हेराय,
मूक, नीरव, क्षुब्ध आ असहाय।
किन्तु
सागर मध्य उठले जा रहल भूकम्प,
जन-मनक पुनि 'कृष्ण' अप्पन
ताकि रहलै शंख।

●

मानवता

मुँह मे एखनहुँ पड़ल छै अधचिबाओल
हरित, कोमल आस्था केर शस्य,
कानमे एखनहुँ गूँजै छै तानसेनक गीत
किन्तु,
कुरुक्षेत्रक देखि भीषण रथ
धनुष आ तीर
भयाकुल अछि हरिन-दल
संत्रस्त
द' रहल चकभाउर ठामहि ठाम।

●

मुखौटा

ओहि दिन अद्‌भुते भेलै
ओ बिना मुखौटेक सड़क पर चलि आयल छल
आश्चर्य !
ओकरा किओ चीन्हि नहि रहल छलै
मात्र मुखौटेकें चिन्हैत छलै लोक
मुखौटे ओकर वास्तविकता बनि गेल छलै
मुखौटेक हँसी असली हँसी छलै
मुखौटेक भंगिमा असली भंगिमा छलै
ओ घबड़ा गेल
परिचय पर परिचय देब' लागल
अबांछित बाढ़िक भसाठ जकाँ
भसिआइत चलि जाइत सड़क पर
लोकक आन्हर भीड़,
होटलक सामने, फुटपाथ पर

एँठकाँट केर लेल अटकल अनेक धधकल आँखि;
हॉस्पीटलक बराम्दा पर
नकली दबाइ सँ दम तोड़ैत असली मरीज,
एसेम्बलीक गेट पर
जीबक लेल खाइत गोली,
वकालतखानामे बिकाइत कानूनक
जिल्दहीन किताब,
ब्लाउजक पारदर्शी फीताकें नोचैत
पाछूक व्यस्त अनेक घिनौन दृष्टि,
अनेक अन्हारकें
अपन उजरा धोती-कुर्त्तामे नुकौने
धड़फड़ायल अगुतायल टाङ हाथ ।
हम सबटा सही सही देखि सकैत छी
कहि सकैत छी,
विश्वास करू, हमरा चीन्हू ।
मुदा लोक नठि गेल
चीन्हब अस्वीकार क' देलक,
लोक मात्र मुखौटा सँ परिचित छल ।
ओ डरि गेल
आ भागल घर दिस
आ आबिकें पुनः मुखौटा चढ़ा लेलक
आ ताहि दिन सँ
बिनु मुखौटाक बहरायब छोड़ि देलक ।

चिंता

अहाँ सड़क पर सँ भागि सकैत छी।
सड़क : जे एकटा 'कॉलगर्ल' जकाँ संग हेबाक
लेल प्रतीक्षामे रहैत अछि।
जे खंडिता अछि
मर्दिता अछि, चिरनवीना अछि,
कोलाहल जकर निरंतर शील-हरण
करैत रहैत अछि।
सड़क जे अनेक इतिहासक साक्षी अछि।
अहाँ कुकुरमाछी जकाँ लुधकल
सड़कपरक भीड़ सँ
अपन जान बचा कें
भागि आबि सकैत छी अपन घर।
मुदा
अपन अंतरक परिचित अपरिचित भीड़सँ
अखंड कोलाहल सँ
कोना बाँचि सकैत छी ?
कोना भागि सकैत छी ?
(वस्तुतः)
अहाँ सड़के जकाँ विवश छी
अहाँ मात्र सड़क छी
बिचारक यात्री चलि रहल अछि अविराम।

●

निष्ठा

देखैत छी एहि खत्ताक पानि कें ?
दिनोदिन सुखैले जा रहल अछि,
धोखासँ छूटल अछि
प्रवाहसँ टूटल अछि
एकटा छोटछिन खाधिमे
एकटा छोटछिन पानि,
पानि निरंतर सुखैले जा रहल अछि,
पानि डरि गेल अछि,
दुखी अछि
उदास अछि
आब ओ अपन तटक निरीह दूबिकें
नहि बचा सकत
नहि द' सकत कोनो सुख आब।
ओकर 'सुख' बहुत छोट अछि
जाहि लेल बहुत पैघ दुख उठा लेलक
देखैत छी एहि खत्ताक पानि ?
निश्चय सुखा जायत।

●

मूल्य

दूबर पातर छोटछिन इजोतक टुकड़ी
महाकाय महादानव अन्हारसँ लड़ैत लड़ैत
थाकि रहल अछि
अंग प्रत्यंग टूटि रहल छै
समर्थन लेल एम्हर ओम्हर तकैत अछि
तकैत अछि दूबर पातर छोटछिन
एसगर इजोतक एकटा टुकड़ी।
टुकड़ीक मोनमे निश्चयक एकटा विस्तृत आकाश अछि
ई लड़त,
अन्त धरि लड़त
एसगरो लड़त, लड़िते रहत
'अन्हार' के परास्त करत
निश्चय करत
दूबर-पातर
छोटछिन
इजोतक ई टुकड़ी।

मनुखदेवा

हम भरल छी एकटा खालीपनसँ
ओहि फोंकके खेतक मनुखदेबा जकाँ
वस्त्राभूषणसँ सज्जित क' सड़क पर ल' अनैत छी।
सड़क पर मनुखदेबाक भीड़
अपस्याँत दौड़ैत रहैत अछि
अंध, बधिर, बौक।
ने कियो ककरो देखि पबैत अछि
ने कियो ककरो चीन्हि पबैत अछि।
सड़क एकटा अनचिन्हार जंगल बनि जाइत अछि।
मनुखदेवा हिंसक भ' उठैत अछि।
सबटा इजोत गिड़ने चल जाइत रहैत अछि
आ' अन्हारक सिट्ठीसँ
बाटके घिनौने चल जाइत रहैत अछि।
हम एकटा मनुखदेवा
एकटा फोंक।

हमर पीढ़ी

कियो कहलक जे हमर पूर्वज जानवर छल
हम जानवरेक स्मृति-शष छी
परम्परा विशेष छी।
खोहसँ अट्टालिका धरि
छालसँ टेरेलिन धरि
अनेक भूगोलक अनेक इतिहास थिक।
वस्तुतः हम 'महान' जानवरक
अति 'क्षुद्र' संतान छी
ओकर हत्या, भूख लेल छल
हमर भूख, हत्याक लेल अछि
एही हत्याक लेल
जन्मल अछि विज्ञान।
असली विज्ञान
नकली हृदय आ नकली धड़कन बनबैत अछि,
असली कार्य लेल नकली मनुष्य बनबैत अछि।
नकली नहि बना सकल हथियार
नकली नहि बना सकल युद्ध।
असली विज्ञान असली आदमी
नहि बना सकल।
हम सब असली जानवरक
नकली संतान छी।

●

ईर्ष्या

अछि छोट वृत्त
चंचल, अमांगलिक, क्षणभंगुर
ईर्ष्याक एक मुट्ठी बसात
असमर्थताक किछु खड़पात
सब निराधार।
तैयो क्षण भरि लै
बिलमि जाउ
थुक थुका लियऽ
बढ़ि जाउ
प्रगति केर पंथ अपन उत्सुक पिपनीसँ तकइत अछि।

●

पैघत्व

पैघत्व नहि थिक पूस मासक रौद
नहि थिक
गुमसराइन भादवक सिहकी
ओ थिक क्रेन
जे उतरल इंजिनकें
पुनः पटरी पर चढ़ा दैछ।

●

आकांक्षा

गुमटीक घर जकाँ
हमर एकांत
थाकल अछि,
अभावक रौदमे झरकल अछि
ताड़क गाछ जकाँ
उचकि-उचकिकें ताकि रहल अछि
दूर-दूर धरि
एकटा छाहरि।
एकटा छोटछिन आकाश
आकाशक छोटछिन एकटा इन्द्रधनुष
इन्द्रधनुषक रंग
रंगक उत्साह,
उत्साहक एकटा छाहरि।
एखन मालगोदाम लग
गड़कल खलिया डिब्बा जकाँ
मोन उदास अछि,
टुकटुक तकैत अछि
कोनो ट्रेनक हलचल।

●

सान्निध्य

हकमैत दिन
रातुक एसगरुआ-पहाड़क आतंक सँ
भयाकुल संध्याक कोरामे नुका रहल
आउ गप्प करी
शब्दहीन, स्वरहीन
हमरा अहाँक बीचमे जतेक भाव अछि
सबटा अभावसँ जनमल अछि।
एकटा अभावक भाव
किन्तु ओहिमे भावक अभाव नहि अछि।
आउ हमरा सब ओहि भाव लेल
एकटा भाषा ताकी
जाहिसँ ओहिमे एकटा अर्थ भरि सका
एहि संध्याकें सार्थक बना सकी
सिहकैत बसातकें भोगि सकी।
डूबि सकी।
आउ गप्प करी।
शब्दहीन, स्वरहीन।

●

ताजा खबरि

पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबार
हमरा जनैत अछि, रगरग जनैत अछि
छपिते रहैत अछि
लिपिस्टिकक खबरि, महिला-वर्षक नाम पर
छपैत रहत हॉस्पीटलक थाकल झमारल
स्कर्ट केर खबरि, बलात्कारक खबरि,
अन्हार मोड़ परक खबरि, कोनो फूलन देवीक खबरि
उजरा इजोतमे पढ़ैत रहब करिया खबरि।
पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबारमे
उदास नीरसतामे ठाढ़ हमर गामक खबरि नहि रहैत अछि
नहि रहैत अछि बेमाय फाटल खेत
हकन्न खुरपी आ कोदारि
ठोर पर फुफरी पड़ल खरिहान
हाटक बाट तकैत चेथरा पहिरने होलमानी ध्वजा
अरिपनक पिठारक प्रतीक्षामे
वेनङ्कन चार परक कौआ
खलिया लादि पर थुथून रगड़ैत सिलेबिया बड़द
पेटकान लधने कुकूर
कड़चीक अभावमे औनाइत टाटक पोरो-लत्ती
फाटल आङीक सियनि जर्का दरकल मुसुकान।
ई सब किछु नहि रहैत अछि
रहैत अछि फूलन देवीक खबरि
पाँचम मंजिलसँ छप'बला अकबार हमरा
जनैत अछि
रग-रग जनैत अछि।

●

कुमारि मुसुकान

आङनक कुमारि मुस्कान
आब आङनमे नहि रहि सकैछ
जाय पड़तै आङनक पार
दोसर संसार।
बुढ़बा चौकठि टुकटुक तकैत अछि
थाकल अछि, चूर अछि
अनेक द्वार दौड़ल अछि
बेर बेर दौड़ल अछि
हतास अछि निराश अछि
हाथ पैर फेकैत अछि मोनकेँ मारैत अछि
कोना सजतै आङनक मुसुकान
कुमारि मुसुकान ?
बुढ़बा चौकठि केर फाटल छै बेमाय
ने रातिकेँ निन्न
ने दिनकेँ चैन
ताकै छै टुकटुक
थाकल आ चूर
आङनक कुमारि मुसुकान।

●

भय

दौड़ू दौड़ू, बजाउ, बचाउ।
दौड़ू, ऐ बाघ ! ऐ सिंह ! ऐ साँप ! ऐ भूत ! ऐ प्रेत
दौड़ू, बचाउ।
हे ओ देखू आदमी,
आदमी हमरा दिस तकैत अछि
हम आदमी सँ बहुत डरैत छी
दौड़ू।
बचाउ।

●

एसगर

डूबैत जा रहल अछि हमर 'आवाज'
एहि माथाहीन भीड़क असम्बद्ध कोलाहलमे
हमर 'आवाज' डूबल चल जा रहल अछि
असहाय
विवश
ओकर लहराइत हाथ एखनहु देखबामे आबि रहल अछि
सब ताकि रहल अछि
मूक, असमंजसमे।
कहियो जागत पौरुष (?)
ता कतेको डूबि गेल रहत।

●

नीति

कहैत अछि, पहिने एहो दने राजपथ छल
तैं शिला-लेख गड़ल छलै
'संतोषं परमं धनम्'
'पर द्रव्येषु लोष्ठवत्'
'मातृवत परदारेषु'
'सत्यमेव जयते'
कहैत अछि पहिने एम्हर नीक नगर छलै
लोक पढ़ैत छलै
शिला-लेख गड़ल छल।
किन्तु नगर उजड़ि गेल, चलि गेल दोसर दिस।
राजपथ टूटि गेल
आवाजाही बन्द भेल
आब बियाबान अछि
जंगल, उजाड़ अछि
शिला-लेख पड़ल अछि
अक्षर पर धूरा अछि
निरर्थक पूरा अछि।

●

मिथिला : मैथिली

शून्य दृष्टिसँ मिथिला तकइछ देशक नव इतिहास।
कोशी आ कमलाक नोरमे भासल अछि विश्वास॥

बिलटि गेल अछि 'देसिल बयना' विद्यापति केर भाषा।
विस्फो-डीहक पाञ्चजन्य गढ़तै नवका परिभाषा॥

याज्ञवल्क्य, उदयन, मंडन आ लोरिक केर ई देश।
मैथिलीक अधिकार लेल अछि साजि रहल रण वेश॥

जनक जनपदक जागि रहल अछि विद्यापतिक भवानी।
मिथिला केर इतिहास नपुंसक केर इतिहास ने मानी॥

चट्टानी ई चरण उठल, मानत नहि धधकल धधरा।
मिथिला मैथिल मैथिलीक अछि बीति गेल अधपहरा॥

हमर रोष छल रुद्ध, क्रुद्ध अछि चारि कोटि केर वाणी।
काल बनत विकराल, उठि रहल मैथिलीक सेनानी॥

मिथिला फूकत शंख, धैर्य केर डोलि रहल अछि आसन।
अधिकारक भूखल गर्जन लग बाँचत नहि सिंहासन॥

माङल नहि, छीनल जाइत अछि इतिहासक अधिकार।
चारि कोटि मिथिलाक कंठमे अछि भैरव-हुँकार॥

अन्हड़, बज्र, बिहाड़ि, पौरुषक लेल करैछ परीक्षा।
अधिकारक उत्तराधिकारी नहि मङैत अछि भिक्षा॥

●

प्रो० मायानन्द मिश्र

जन्म : १७-८-१९३४ ई० ।

जन्म स्थान : बननिया (सहरसा)

पता : विद्यापतिनगर, सहरसा-८५२२०१

प्रकाशित कृति :

भाङक लोटा	(कथा-संग्रह, १९५१)
आगि मोम आ पाथर	(कथा-संग्रह, १९६१)
चन्द्रविन्दु	(कथा-संग्रह, १९८३)
बिहाड़ि पात पाथर	(उपन्यास, १९६०)
मंत्रपुत्र	(उपन्यास, १९८६)
खोंता आ चिड़े	(उपन्यास, १९८८)
दिशान्तर	(कबिता, १९६५)

प्रमुख अप्रकाशित कृति :

माटिक लोक	(उपन्यास)
एके बापक बेटा	(रेडियो नाटक)
ठकनी	(उपन्यास)
प्रथमं शैल पुत्री च	(इतिहासाख्यान)
पुरोहित	(उपन्यास)
शतरशेष	(कथा-संग्रह)